2900th Janm Kalyanak of Bhagwan Parshvanath

2900 years ago, in the historic city of Varanasi in Bharatvarsha, King Ashvasena ruled with compassion and justice. His queen, Vamadevi, carried within her a magnificent soul, heralded by 14/16 divine dreams. During her pregnancy, Queen Vamadevi had the vision of a snake by her side in the dead of the night. Acting swiftly, she informed the King, ultimately saving his life from imminent danger. When the time came, she gave birth to a son at midnight on the 10th/11th day of the dark fortnight of Pausha, under the Vishakha constellation. The boy was named Parshva Kumar. In celebration of his birth, King Ashvasena organized a grand ten-day festival, distributing abundant donations of food, clothing, and wealth to the people.

From an early age, Parshva Kumar demonstrated fearlessness, intellectual brilliance, and a natural inclination towards religious life. His education was marked by diligence, enabling him to excel in knowledge as well as skills such as weaponry and horsemanship, all achieved through his sharp intellect. As Parshva Kumar reached adulthood, King Ashvasena arranged his marriage with Princess Prabhavati, daughter of King Prasenajit. However, the Digambar tradition holds that Parshva Kumar remained unmarried. Despite living a royal life, Parshva Kumar remained detached and absorbed in spiritual contemplation.

Recognizing the appropriate time for renunciation, Parshva Kumar began distributing his worldly possessions. On the eleventh day of the dark fortnight of Pausha, he reached the Ashram Udyana in central Varanasi. There, beneath an Ashoka tree, he performed the ritual of plucking out his hair in five handfuls, removed his ornaments, and initiated himself into asceticism. As a monk, Muni Parshva devoted himself to meditation and spiritual practice. Traveling widely, he preached the principles of dharma, truth, and ahimsa (non-violence) to the masses. On one of his journeys, he returned to the Ashram Udyana in Varanasi, where he entered in deep meditation beneath a Ghataki tree. After an eight-day fast, he overcame all destructive karmas, attaining omniscience (Kevala Jnana) and omni perception. Following his enlightenment, Bhagwan Parshvanath delivered discourses for the spiritual upliftment of all living beings. His powerful and lucid teachings drew many followers, including King Ashvasena, Queen Vamadevi, Queen Prabhavati, and numerous scholars who were inspired to take Jain initiation.

To commemorate this historic occasion, the Department of Posts is proud to issue a commemorative Postage Stamp on 2900th Janm Kalyanak of Bhagwan Parshvanath, recognizing his enduring contributions to human welfare and spirituality.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Ms. Anjali
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

परोस्परोपग्रहो जीवानाम्

भगवान पार्श्वनाथ का 2900वां जन्म कल्याणक

2900th Janm Kalyanak of Bhagwan Parshvanath

विवरणिका **BROCHURE**

भगवान पार्श्वनाथ का 2900वां जन्म कल्याणक

2900 वर्ष पूर्व, भारतवर्ष के ऐतिहासिक शहर वाराणसी में राजा अश्वसेन का राज था। वे अत्यंत दयालु एवं न्यायप्रिय राजा थे। उनकी रानी, वामादेवी को 14/16 दिव्य स्वप्न दिखे, जिससे उन्हें आभास हुआ कि उनके भीतर एक दिव्य आत्मा पल रही है। गर्भावस्था के दौरान, एक दिन रात्रि में रानी वामादेवी को ऐसा प्रतीत हुआ मानों उनकी बगल में सांप हो। उन्होंने तुरंत राजा को इस बारे में सूचित कर उनके जीवन की रक्षा की। समय आने पर, रानी ने पौष माह के कृष्ण पक्ष की 10 और 11 तारीख की मध्यरात्रि को विशाखा नक्षत्र में एक बालक को जन्म दिया। उस बालक का नाम पार्श्व कुमार रखा गया। पार्श्व कुमार के जन्म के उपलक्ष्य में राजा अश्वसेन ने दस–दिवसीय भव्य उत्सव का आयोजन किया। साथ ही लोगों को दिल खोलकर भोजन, कपड़े और धन–दौलत का दान दिया।

बचपन से ही, पार्श्व कुमार अत्यंत निडर, बुद्धिमान एवं धार्मिक जीवन के प्रति रुचि रखने वाले थे। उन्होंने मन लगाकर शिक्षा ग्रहण करते हुए अपार ज्ञान अर्जित किया। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के बल पर उन्होंने शस्त्र विद्या और घुड़सवारी में भी महारत हासिल की। पार्श्व कुमार के युवावस्था प्राप्त करने पर राजा अश्वसेन ने उनका विवाह राजा प्रसेनजीत की पुत्री राजकुमारी प्रभावती के साथ निश्चित कर दिया। तथापि, दिगंबर परंपरा के अंतर्गत माना जाता है कि पार्श्व कुमार अविवाहित रहे। शाही महल में रहते हुए भी पार्श्व कुमार राजसी जीवन से विरक्त रहे और आध्यात्मिक चिंतन में लीन रहते थे।

अपरिग्रह के लिए उचित समय देखकर, पार्श्व कुमार ने अपनी सारी सांसारिक संपत्ति दान दे दी। पौष मास के कृष्ण पक्ष के ग्यारहवें दिन, वे मध्य वाराणसी के आश्रम उद्यान में पहुंचे। वहां अशोक वृक्ष के नीचे उन्होंने पांच मुट्ठी केश लोचन कर अपने आभूषण उतार दिए व तपस्या में लीन हो गए। संन्यासी के रूप में, मुनि पार्श्व ने अपनी जीवन ध्यान और आध्यात्मिक कार्यों के प्रति समर्पित कर दिया। उन्होंने, देशभर में यात्रा कर आमजन को धर्म, सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का उपदेश दिया। ऐसी ही एक यात्रा के दौरान वे वाराणसी के आश्रम उद्यान में लौटे। यहां वे घातकी वृक्ष के नीचे गहन ध्यान में लीन हो गए। आठ दिन के उपवास के पश्चात उन्होंने सभी घाती कर्मों पर जीत प्राप्त की और सर्वज्ञता (केवल–ज्ञान) और सर्वव्यापी अवधारणा को प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति के बाद, भगवान पार्श्वनाथ ने सभी जीवों के आध्यात्मिक उत्थान के लिए उपदेश दिए। उनकी प्रेरणादायी (गूढ़) और सुस्पष्ट शिक्षाओं ने राजा अश्वसेन, रानी वामादेवी, रानी प्रभावती और विभिन्न विद्वानों सहित अनेक अनुयायियों को जैन धर्म की दीक्षा लेने के लिए प्रेरित किया।

भगवान पार्श्वनाथ के 2900वें जन्म कल्याणक के उपलक्ष्य में, भारतीय डाक एक स्मारक डाक–टिकट जारी कर रहा है, जो मानव कल्याण और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भगवान पार्श्वनाथ के चिरस्थायी योगदान को रेखांकित करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरुपण कैशे पाठ : सुश्री अंजलि

: प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रितडाक–टिकटें	: 303500
Stamps Printed	: 303500
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00